(1) द्रव्य (Substance)

द्रव्य → यह वैशेषिक दर्शन का प्रथम पदार्थ है। द्रव्य की परिभाषा 'वैशेषिक सूत्र (1.1.15) में करते हुए बताया गया है- "क्रिया-गुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्" अर्थात् द्रव्य गुण और कर्म का अधिष्ठान है और अपने कार्यों का उपादान कारण है। द्रव्य के बिना गुण और कर्म की कल्पना भी असंभव है। गुण और कर्म द्रव्य में ही समवेत होते हैं। द्रव्य पदार्थ उसे कहते हैं जो रूप, रस आदि गुणों का तथा चलनादि क्रिया का आधार हो। द्रव्य में कोई न कोई गुण अवश्य होता है। जैसे कि, पुष्प एक द्रव्य है, उसमें रक्त, पीत आदि रूप और गंध अवश्य होता है। ऐसा कोई द्रव्य नहीं है जिसमें कोई गुण न हो। इसी तरह चलनात्मक क्रिया प्रायः सभी द्रव्यों में विद्यमान रहती है। यद्यपि आकाश आदि में चलनात्मक क्रिया नहीं है, परन्तु शब्द गुण तो उसमें भी है ही। इसलिए नैयायिकों ने द्रव्य का लक्षण बताते हुए कहा है कि, जो समवाय सम्बन्ध से गुण और कर्म का आश्रय हो और जो किसी का भी समवायिकारण बनता हो, उसे द्रव्य कहते हैं। द्रव्य में सामान्य निहित होता है। द्रव्य के सामान्य को 'द्रव्यत्व' कहा जाता है।

द्रव्य के प्रकार → द्रव्य नौ प्रकार के बताए गए हैं -

"पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं कालो दिगात्मा मन इति द्रव्याणि" ॥ 5 ॥

अर्थात् पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल, आकाश, दिक्, काल, आत्मा और मन, ये नौ द्रव्य के प्रकार हैं। इन द्रव्यों में प्रथम पाँच (5) यानि कि पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को पंचमहाभूत (five physical elements) कहा जाता है।

इन पंचमहाभूतों में कोई न कोई विशेष गुण पाया जाता है जिसका बाह्येंद्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष होता है। वैशेषिक दर्शन में इन्हीं पंचमहाभूतों से विश्व का निर्माण मानता है। सभी भौतिक पदार्थ भूत ही हैं।

पंचमहाभूत → पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल एवं आकाश को पंचमहाभूत की संज्ञा दी गई है। प्रत्येक भूत का एक-एक विशेष गुण होता है। जैसे कि -

पृथ्वी → गंध। दूसरी वस्तुओं में गंध (जल, वायु) पृथ्वी के अंश के मिलने के कारण दीख पड़ता है। इसलिए गंदा पानी महकता है स्वच्छ जल नहीं।

जल → रस।

वायु → स्पर्श।

अग्नि → रूप।

आकाश → शब्द।

ये पाँचों विशेष गुण बाह्येन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं। जिस इन्द्रिय से जिस विशेष गुण का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, उसी के आधारभूत द्रव्य से उस इन्द्रिय की उत्पत्ति होती है। जैसे - घ्राणेन्द्रिय पृथ्वी के तत्वों से निर्मित है। रसनेन्द्रिय जल के तत्वों से। इसी तरह चक्षु का उपादान कारण तेज, त्वचा का वायु और कान (श्रवणेन्द्रिय) का उपादान कारण आकाश है। पार्थिव द्रव्य गंधयुक्त होते हैं।

पृथ्वी, जल, तेज, वायु के परमाणु नित्य हैं और उनसे बने कार्य-द्रव्य अनित्य हैं। अर्थात् इनके परमाणु नित्य हैं, क्योंकि परमाणु निरवयव, अनादि और अनंत होता है। इनके अतिरिक्त सभी कार्य द्रव्य जो परमाणुओं के संयोग से उत्पन्न होते हैं और इसीलिए जो संयोजन या सावयव होने के कारण विनाश को प्राप्त हो सकते हैं, वे अनित्य हैं। इस प्रकार से वैशेषिक दर्शन में पृथ्वी, जल, अग्नि

तथा वायु के द्रव्य दो प्रकार के होते हैं - (i) नित्य, (ii) अनित्य। इन चार भूतों के परमाणु नित्य हैं और उनसे बने कार्य-द्रव्य अनित्य हैं। परमाणु दृष्टिगोचर नहीं होते हैं, उनका अस्तित्व अनुमान से प्रमाणित होता है।

आकाश → यह पाँचवाँ भौतिक द्रव्य है। आकाश परमाणुओं से रहित है। इसका प्रत्यक्षीकरण नहीं होता, बल्कि इसके गुणों को देख कर इसका अनुमान किया जाता है। आकाश का गुण शब्द है। अतः आकाश शब्द गुण का आधार है। यह सर्वव्यापी और नित्य है, निरवयव है और निरवयव होने के कारण यह उत्पादन और विनाश से परे है। एक होने के कारण यह सामान्य से रहित है।

दिक् → दिक संसार की वस्तुओं को आश्रय प्रदान करता है। यदि दिक न होता तो संसार की विभिन्न वस्तुएँ एक-दूसरे के अंदर प्रविष्ट हो जाती। दिक् अद्दश है। इसका ज्ञान अनुमान के द्वारा होता है। पूर्व-पश्चिम, निकट-दूर, यहाँ-वहाँ, इत्यादि प्रत्ययों का आधार दिक् है। यह नित्य, सर्वव्यापक और विशेष गुण से हीन है। यद्यपि दिक् एक है फिर भी दैनिक जीवन में एक स्थान और दूसरे स्थान से दूसरे स्थान, पूर्व-पश्चिम, दिक् के औपाधिक भेद हैं। द्रव्य भौतिक द्रव्य नहीं है।

काल → काल भी दिक् की तरह नित्य और सर्वव्यापी है। यह सभी परिवर्तनों का साधारण कारण है। इसका प्रत्यक्षीकरण नहीं होता तथा यह अनुमान का विषय है। प्राचीन-नवीन, भूत-वर्तमान-भविष्य, पहले-बाद, इत्यादि प्रत्ययों का आधार काल है। यद्यपि काल एक है फिर भी उपाधि-भेद के कारण यह अनेक दिखाई पड़ता है। क्षण, दिन, मास, वर्ष, मिनट इत्यादि काल के भेदों का कारण उपाधि है। दिक् काल से भिन्न है क्योंकि दिक् का विस्तार होता है जबकि काल विस्तारहीन है।

मन → मन को अन्तरिन्द्रिय (Internal Sense Organ) माना गया है। मन अदृश्य है। इसका ज्ञान अनुमान द्वारा होता है। मन को अणुरूप और निरवयव माना गया है। अतः एक समय एक ही प्रकार की अनुभूति संभव है, क्योंकि उस अनुभूति को अपनाने वाला मन अविभाज्य है, नित्य है। यह नित्य इसलिए है कि यह अवयवहीन है। मन सक्रीय है।

वैशेषिक दर्शन में मन को सिद्ध करने के लिए दो तर्क दिए गए हैं —

(i) - जिस प्रकार बाह्य वस्तुओं के ज्ञान के लिए बाह्य इन्द्रियों की सत्ता माननी पड़ती है इसी प्रकार आत्मा, सुख-दुःख आदि आन्तरिक व्यापारों को जानने के लिए एक आन्तरिक इन्द्रिय की आवश्यकता है। वही आंतरिक इन्द्रिय मन है।

(ii) - ऐसा देखा जाता है कि पाँचों बाह्येन्द्रियों के अपने विषयों के साथ संयुक्त रहने पर भी हमें रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श की अनुभूति नहीं होती है। इससे सिद्ध होता है कि बाह्य इन्द्रियों के अतिरिक्त एक आंतरिक इन्द्रिय का सहयोग भी ज्ञान के लिए आवश्यक है, जो कि 'मन' है।

आत्मा → आत्मा उस सत्ता को कहा जाता है जो चैतन्य का आधार है। इसलिए कहा गया है कि आत्मा वह द्रव्य है जो ज्ञान का आधार है। वस्तुतः वैशेषिक ने दो प्रकार की आत्माओं को माना है — जीवात्मा और परमात्मा।

जीवात्मा की चेतना सीमित है जबकि परमात्मा की चेतना असीमित है। जीवात्मा अनेक है जबकि परमात्मा एक है। परमात्मा ईश्वर का ही दूसरा नाम है।

वैशेषिक के मतानुसार, ज्ञान, सुख-दुःख, इच्छा, धर्म-अधर्म इत्यादि आत्मा के विशेष गुण हैं। आत्मा अमर, अनादि और अनंत है। वैशेषिक दर्शन में चैतन्य आत्मा का आगन्तुक गुण है न कि स्वरूप।